2863463

कुल पृष्ठ संख्या–24 (कवर पेज सहित)

क्रम संख्या

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

नोट

माध्यम – हिन्दी ☐ अंग्रेजी ☐

विषय हिन्दी

परीक्षा का दिन सोमवार

दिनांक २५/५/२२

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य हैं, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदारणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी
(परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1	12	19	3
2	6	20	3
3	12	21	4
4	2	22	4
5	2	23	4
6	2	24	
7	2	25	
8	2	26	
9	2	27	
10	2	28	
11	2	29	
12	2	30	
13	2	31	
14	2	योग	80
15	2	प्राप्त अंकों का कुल योग (Round off)	
16	2	अंकों में	शब्दों में
17	3	80	अस्सी
18	3		

परीक्षक के हस्ताक्षर अनूपपरावत संकेतांक 4 5 1 0 0

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 58 जी.एस.एम. ईको मैपलिथो कागज ही उपयोग में लिया गया है। 168/2021

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशंषा पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध हैं।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित है। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
12		
1	①	(i) (ब) तुलसी के काव्य की उपयोगिता।
1		(ii) (द) रामचरितमानस।
1		(iii) (अ) जातीय एकता का भाव उत्पन्न करने में।
1		(iv) (स) शताब्दियों से।
1		(v) (अ) भारतीय जनता की भावात्मक एकता दृढ़ हुई।
1		(vi) (अ) रैदास का समर्पण भाव
1		(vii) (ब) पानी
1		(viii) (स) जलती है
1		(ix) (द) लौकिक रूप का
1		(x) (स) किसी विशेष वस्तु में दूसरी वस्तु के मेल से उसमें विशिष्ट गुण का समावेश हो जाना
1		(xi) (अ) माता का आँचल से
1		(xii) (द) हिमालय की यात्रा का
6	②	
1		(i) व्यक्ति
1		(ii) निश्चित
1		(iii) पाँच प्रकार के
1		(iv) परिवर्तन
1		(v) २२
1		(vi) कृत प्रत्यय
1	③	1) संधि दो या दो से अधिक वर्णों के मेल से बनती है। स्वर संधि पाँच प्रकार की होती है। (i) दीर्घ संधि (ii) गुण संधि (iii) वृद्धि संधि (iv) यण् संधि (v) अयादि संधि।
1		२) कर्मधारय समास में किसी वस्तु को कोई विशेषता दी जाती है जबकि बहुव्रीही समास में शब्द का कोई अन्य या तीसरा अर्थ निकलता है।

BSER-168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

3) आकाश टूटना → कोई बहुत बड़ी समस्या का उत्पन्न होना।

4) सिर्फ अपना ही लाभ प्राप्त करना।

5) नेताजी का चश्मा पाठ सभी भारतीयों के त्याग, बलिदान व सहयोग की दर्शाता है।

6) मन्नू भंडारी के पिता की सबसे बड़ी दुर्बलता थी कि अपनो के विश्वासघात के कारण उनका दूसरों पर विश्वास समाप्त हो गया था वे सभी लोगों को शक की नजरों से देखते थे।

7) नौबतखाने में इबादत पाठ एक मशहूर शहनाई वादक बिस्मिल्ला खाँ व उनके जीवन के बारे में है।

8) गोपियों ने ऐसा इसलिए कहा क्योंकी उनको लगा की जब श्रीकृष्ण ने उद्धव के द्वारा योग संदेश भिजवाया तब वे उस योग संदेश को देखकर घबरा गई तथा उन्होंने उद्धव पर व्यंग्य करते हुए कहा कि उद्धव तुम तो श्रीकृष्ण के समीप रहते हुए भी उनके प्रेम में नहीं पड़े हो। इसलिए तुम बहुत बड़भागी हो।

9) जब श्रीराम जी ने परशुराम जी को अपनी मृदु वाणी से समझाया तो परशुराम जी का क्रोध शांत हो गया।

10) आत्मकथ्य कविता में कवि जयशंकर प्रसाद के जीवन की अभिव्यक्ति है कि उन्होंने किस प्रकार कितने अधिक दुख झेले थे।

(11) माता का आँचल पाठ में एक नन्हें शिशु तथा उसके माता-पिता के जीवन के बारे मे बताया गया है। किस प्रकार भोलेनाथ को उसके माता-पिता अतिशय प्रेम करते हैं।

(12) यूमथाँग एक पर्वतीय क्षेत्र है जहाँ प्रकृति का सौंदर्य अतिसुन्दर है। यह सिक्किम गंगटोक में 500 फीट ऊँचाई पर स्थित है।

---

(4) पानवाले से हालदार साहब ने पूछा की कैप्टन कोई आजाद हिंद फौज का सिपाही है या नेताजी का कोई साथी है तब पानवाले ने उपेक्षापूर्ण जवाब दिया कि 'वो लंगड़ा क्या जाएगा फौज में पागल

BSER-168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
		है पागल इस प्रकार उसने जवाब दिया था।
2	5	बालगोबिन भगत रेखाचित्र के माध्यम से एक साधु का जीवन जीने वाले बालगोबिन भगत के चरित्र का उद्घाटन किया है कि किस प्रकार वे गृहस्थ जीवन जीते के साथ अपना साधुत्व रूप भी बनाए रखते हैं। वे दूसरे की संपत्ती को व्यवहार मेंलाना तो दूर छुते तक भी नही हैं।
2	6	नवाब साहब ने जब देखा कि कोई और व्यक्ति भी उस डिब्बे में बैठा है तो अपनी नवाबी दिखाने का उन्हें एक मौका मिल गया था इसलिए उन्होंने खिरे की फाँकों को खाया नही तथा केवल सूंघ कर ही खिड़की से बाहर फैंक दिया।
2	7	काशी में मरण भी मंगल माना गया है क्योंकि काशी एक ऐसा स्वर्ग है जहाँ आपको स्वर्ग की भाँति विभिन्न रूप देखने को मिलेंगे वहाँ ऐतिहासिक स्थल, प्राकृतिक स्थल इतने मनोहारी है कि लोग उन्हें देखने के लिए बहुत अधिक उत्तेजित रहते हैं। इसके अलावा काशी में भगवान शिव व अन्य तीर्थ स्थल भी है। इसलिए यहाँ मरण भी मंगलकारी है।
2	8	जब श्रीकृष्ण द्वारा दिए योग संदेश को लेकर उद्धवजी गोपियों के पास गए तो गोपियों ने कहा कि श्रीकृष्ण मथुरा के राजा बन गए हैं परन्तु लगता है उन्हें राजा का धर्म ज्ञात नही है। राजधर्म यह होता है कि प्रजा के दुखों को दूर करना तथा उनसे प्रेम करना उनकी रक्षा करना प्रजा को सताना कोई राजधर्म नही होता।
2	9	क्रिया ⇒ जब किसी के द्वारा किसी कार्य को करना या होना पाया जाए उसे क्रिया कहते हैं। क्रिया के उदाहरण ⇒ भागना, रोना, खाना, खेलना आदि सभी क्रिया के उदाहरण हैं।

BSER-168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(10) इससे कवि का आशय है कि अक्सर जब लड़कियों का विवाह होता है तो ससुराल में उसे कई कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है तथा यदि ऐसे में लड़कियाँ डर जाती है या कमजोर पड़ जाती है तो उनकी इस कमजोरी का लाभ उठाया जाता है। इसलिए कवि ने ऐसा कहा कि लड़की होना परन्तु लड़की की तरह दिखाई मत देना अर्थात् कमजोर ना पड़ना।

2

(11) उत्साह कविता के माध्यम से कवि ने यह संदेश दिया है कि हमें भी बादलों के समान तीव्र तथा दृढ़ रहना चाहिए जिस प्रकार बादल वज्रपात करके तथा मुसलाधार वर्षा करके संपूर्ण धरातल को तपन से मुक्ति दिलाते हैं उसी प्रकार हमें भी अपनी मातृभूमी के लिए कुछ न कुछ अवश्य करना चाहिए।

2

(12) इस पाठ में बच्चों की जिस दुनिया के बारे में बताया गया है वह आज से लगभग बीस वर्ष पुरानी है इसमें बच्चो की एक अलग ही दुनिया का वर्णन किया गया है जिस प्रकार वे बच्चे खेलते थे वह सामग्री आसानी से घरों में ही मिल जाती थी। वे घरौंदा बनाने, मिठाई की दुकान लगाने, बारात का खेल आदि खेलते थे।

2

(13) यह पाठ सत्ता की दिमागी गुलामी तथा चाटुकारिता को दर्शाती है। क्योंकि सरकार उस जॉर्ज पंचम की नाक के लिए परेशान थी जिसने भारत पर इतने कहर ढाए थे। इतने जुल्म किए थे। उसके बावजूद भी सरकार उसी के लिए परेशान थी क्योंकि यदि उसकी मूर्ती पर नाक न लगती तो रानी एलिजाबेथ को बुरा लग जाता केवल इंग्लैण्ड से हमारे संबंध रखने के लिए सरकार इतनी चिन्तित थी। जिससे सरकारी की दिमागी गुलामी साफ-साफ प्रकट होती है।

2

BSER-168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(14) तिस्ता नदी सिक्किम में बहती है। इसकी मुख्य विशेषतायें है कि यह नदी हिमालय के एक छोर से निकलती है। यह सिक्किम के लोगो को उनकी अर्थव्यवस्था चलाने के लिए जल की आवश्यकता को पूरा करती है।

2

(15) यशपाल का जीवन परिचय

यशपाल जी का जन्म सन् 1903 में पंजाब के फिरोजपुर छावनी में हुआ था। इन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा कांगड़ा में पूर्ण की थी तथा लाहौर नेशनल कॉलेज से बी.ए प्राप्त की। वहाँ उनका परिचय भगत सिंह व सुखदेव से हुआ। क्रांतिकारी धारा से जुड़ाव के कारण वे कई बार जेल भी गए परन्तु उन्होंने कड़ी मेहनत की तथा एक सफल लेखक बन गए। उनका देहांत सन् 1976 में हुआ था।

2

इनकी प्रमुख काव्य कृतियाँ है => ज्ञानदीप, तर्क का तूफान, पिंजरे की उड़ान आदि। तथा इनके प्रमुख उपन्यास हैं अमिता, दिव्या, दादा कामरेड तथा पार्टी कामरेड। ये एक महान लेखक थे।

(16) तुलसीदास का जीवन परिचय

तुलसीदास का जन्म सन् 1532 में उत्तर प्रदेश के बाँदा जिले के राजापुर गाँव में हुआ था। इनकी माता का नाम था हुलसी तथा पिता का नाम था आत्माराम दुबे। इनके जीवन के प्रारंभिक वर्षों में ही इनके माता - पिता का देहांत हो गया था। एक महाऋषि के साथ इनका जीवन बिता था। इनके गुरू का नाम था नरहरि तथा बाद मे जब इनका विवाह हुआ तो इनकी पत्नि रत्नावती ने इन्हें कई उपदेश दिए जिससे ये प्रभु - भक्ति की ओर उन्मुख हुए। इनके प्रमुख काव्य संग्रह हैं। इन्होंने ~~राम~~ रामचरितमानस के अलावा भी कई प्रकार के ग्रंथो की रचना की थी। जिसमें गीतावली, दोहावली, विनयपत्रिका तथा कृष्णगीतावली प्रमुख हैं। इनका देहांत सन् 1623 में हुआ

2

BSER-168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(17) प्रसंग => प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक के पाठ नौबतखाने में इबादत से लिया गया है। इसमें कवि द्वारा कबीले के लोगों पर व्यंग्य किया गया है तथा वे देश की स्थिति को देखकर दुखी होते हैं।

व्याख्या => कवि कहते हैं कि जब ये समाज उन वीरों जिन्होंने देश के लिए अपनी संपूर्ण जिंदगी दाव पर लगा दी तथा हमारे वे महान पूर्वज जिन्होंने हमें आजादी दिलाने के लिए इतने यत्न सहे। आज यह समाज उसी कुर्बानि उन्हीं लोगों पर हँस रहा है। इससे अधिक दुख की बात भला क्या हो सकती है। और पंद्रह दिन बाद जब कवि फिर से उसी रास्ते से गुजर रहे थे तो उन्हें लगा कि अब तो ~~सुभाष~~ नेताजी की मूर्ती पर कोई चश्मा नहीं होगा क्योंकि मूर्तिकार चश्मा बनाना भूल गया तथा कैप्टन अब मर चुका है। इसलिए अब मूर्ति चश्माविहिन ही रहेगी। इसलिए वे कहते हैं कि अब यहाँ नहीं रुकेंगे और पान भी नहीं खाएंगे। तथा मूर्ती को भी नहीं देखेंगे क्योंकि उस चश्मे के बिना मूर्ती को देखने का क्या फायदा।

---

(18) प्रसंग => यह पद्यांश कवि सूरदास द्वारा रचित है। इसमें कवि गोपियों के प्रेम तथा दुख को प्रकट करता है।

व्याख्या => कवि कहते हैं कि गोपियाँ योग सन्देश देखकर कहती हैं कि हमारे लिए तो कृष्ण हारिल की लकड़ी के समान है अर्थात् जिस प्रकार हारिल पक्षी ~~लड़क~~ लकड़ी को दृढ़तापूर्वक पकड़े रखता है। उसी प्रकार हमारे लिए भी श्रीकृष्ण लकड़ी के समान है। अतः हम उन्हें कभी नहीं भूल सकते हम तो जागते सोते हमेशा उन्हीं के सपने देखते हैं तथा कान्हा-कान्हा चिल्लाते हैं। परन्तु अब उनका यह योग संदेश

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

देखकर ऐसा लग रहा है जैसे हमनें कोई ~~कम~~ कड़वी ककड़ी खा ली हो। हे उद्धव आप तो हमारे लिए यह योग संदेश रूपी बीमारी लेकर आ गए हो जिसके बारे में तो हमने ना कभी सुना था तथा ना ही कभी देखा था। परन्तु आप यह योग संदेश उन्हीं को दीजिए जिनके मन चकरी हो अर्थात् जिनके मन में भटकन हो हमारे मन तो पहले से ही स्थिर है। अर्थात् कृष्ण पर टिके हुए हैं।

3

विशेष ⇒ (i) इसमें गोपियों ने स्वयं को हारिल पक्षी के समान तथा श्रीकृष्ण को लकड़ी के समान बताया है।
(ii) संस्कृतनिष्ठ खड़ी बोली का उपयोग किया गया ~~क~~ है।
(iii) रूपक, उत्प्रेक्षा तथा उपमा अलंकार का प्रयोग हुआ है।

BSER-168/2021

(19) बालगोबिन भगत ने ऐसा इसलिए कहा था क्योंकी अपने पुत्र की मृत्यु के बाद वे ये समझ गए कि उनकी पुत्रवधू उसका शेष जीवन किस प्रकार ~~कैसे~~ गुजारेगी। इसलिए उन्होंने उसके भाई को बुलवा लिया तथा कहा कि तुम अपनी बहन को ले जाओ तथा उसका पुनः विवाह करवा देना। परंतु भगत की पुत्रवधू जाने के लिए तैयार नहीं थी ~~परंतु~~ क्योंकि वह जानती थी कि भगत जी अब बुजुर्ग हो चुके हैं वे अपना ध्यान स्वयं नहीं रख सकते इसलिए वह उनकी सेवा करना चाहती थी। परंतु भगत जी का निर्णय भी अटल था वे नहीं मान रहे थे उन्होंने कहा कि या तो वह चली जाए नहीं तो मैं यहाँ से चला जाऊँगा जिससे मजबूरन उसे वहाँ से जाना पड़ा।

3

---

(20) छाया मत छूना कविता के माध्यम से कवि ने यह सत्य स्पष्ट किया है कि हमें कभी भी अपने जीवन की स्मृतियों को याद नहीं करना चाहिए क्योंकी उन्हें याद करने से वह पल हमारी आँखों के सामने जीवित हो उठता है। इसलिए हमें कभी भी चाहे मधुर स्मृतियाँ हो या दुखभरी कभी उन्हें याद नहीं करना चाहिए तथा

3

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

अपने जीवन में भविष्य के बारें मे सोचकर अपने भविष्य को सुधारने के लिए कड़ी मेहनत करनी चाहिए।

(२) निबंध ⇒ वैश्वीक महामारी कोरोना।

(i) **कोरोना का अर्थ** ⇒ यह एक ऐसी महामारी है जो कि 31 दिसम्बर 2019 को सर्वप्रथम चीन के वुहान शहर में प्रकाश में आई थी। धीरे धीरे यह महामारी संपूर्ण पृथ्वी पर फैल गई तथा विश्व के लगभग सभी देशों को काफी नुकसान पहुँचाया। यह बीमारी बहुत भयानक थी। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इसका एक नाम रखा था कोविड़-19 क्योंकि कोविड़-19 में को का अर्थ है कोरोना तथा वि का अर्थ है वायरस तथा ड़ का अर्थ है डीसीज। यह बिमारी 2019 में फैली थी इसलिए 2019 में से 19 लिया गया। इस बिमारी या वायरस के कारण कई लाखों लोगो की मृत्यु हो गई थी।

(ii) **महामारी का फैलाव** ⇒ यह महामारी पूरे विश्व में इतनी अधिक फैल गई थी कि लोगो के लिए यह एक त्रासदी बन चुकी थी। विश्व के सभी देशों मे आर्थिक गतिविधियाँ लगभग समाप्त हो गई थी तथा लॉक डाउन लागू कर दिए गए थे। विश्व के विकसित देशों ने भी इस महामारी के सामने घुठने टेक दिए थे। जिसे भी यह महामारी होती थी चंद घंटों में उस व्यक्ति की मृत्यु हो जाती थी। यह वायरस एक दूसरे को छूने से भी फैलता था। लोग रोगी के पास नही जा पाते थे क्योंकी यदि वे उसके पास जाते तो यह बिमारी उन्हें भी लग जाती थी। इस बीमारी के परिणामस्वरूप लोगों की आर्थिक स्थिति शोचनीय हो गई थी।

BSER-168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(iii) महामारी की भयावहता ⇒ यह महामारी इतनी भयानक थी कि लोग इससे डरकर शहर छोड़कर भाग रहे थे। कुछ लोगों के पास तो खाने की चीजों का भी अकाल पड़ गया था। लोगों को एक देश से दूसरे देश भागना पड़ रहा था। इस संक्रमण का लक्षण था खाँसी, जुकाम सर्दी, गले मे दर्द, साँस फूलना आदि तथा सही उपचार न मिलने पर रोगी की मृत्यु भी हो जाती थी। सभी देशों की सरकारें इस महामारी से बचने के लिए विभिन्न प्रकार की व्यवस्थाएँ कर रहे थे परंतु उसके बावजूद भी कोई भी देश इस महामारी पर नियंत्रण नहीं पा सका था। विभिन्न जगहों पर कोरोना की जाँच के लिए कैम्पों की व्यवस्था की जा रही थी। परंतु फिर भी इस महामारी का प्रभाव धीरे-धीरे बढ़ता ही जा रहा था। दुनिया के लगभग सभी देश इससे परेशान थे। इससे बचने के लिए तथा लोगों तक मूलभूत आवश्यकताओं को पहुँचाने के लिए सरकार ने कई प्रकार के कार्यक्रम भी किए थे। तथा अनाज, दालें, आटा आदि वस्तुओं को बाँटा भी जा रहा था। ताकि बिल्कुल निर्धन जो परिवार हैं उनकी आर्थिक स्थिति बिगड़ी होने के कारण वे भूखे ना रहें। सभी लोगों तक सही उपचार पहुँचे आदि सभी कार्यों की जिम्मेदारी सरकार की थी।

(iv) बीमारी से बचने के उपाय ⇒ इस महामारी से बचने के लिए सरकार ने विभिन्न प्रकार के कार्य किए थे। जैसे लॉकडाउन, कर्फ्यू तथा आइसोलेशन, क्वारंटीन आदि व्यवस्थाएँ की थी। विभिन्न देशों के वैज्ञानिक तथा सरकारें इस महामारी से बचाव के लिए टीके आदि की खोज कर रहे थे परंतु इतनी आसानी से इस महामारी का इलाज पाना मुश्किल था। विभिन्न देशों की आर्थिक गतिविधियाँ बिल्कुल धीमी पड़ गई थी। कई प्रकार के देश तो अन्य देशों से कर्ज लेकर अपना कार्य कर रहे थे। लोग व्यापार के लिए एक जगह से दूसरे स्थान पर जा नहीं पा रहे थे

BSER-168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

क्योंकि यातायात व परिवहन के सभी साधन समाप्त हो गए थे। सरकार ने विभिन्न परिवहन के साधनों पर रोक लगा रखी थी। इससे बचाव के लिए सार्वजनिक स्थानों पर जाने, भीड़ इकट्ठी करने, दुकानों पर लोगों के एकत्र होने पर रोक लगा दी गई थी तथा इन नियमों को पालन सुनिश्चित करने के लिए स्थानिय सरकार व पुलिस को जिम्मेदारी सौंपी गई थी। इसलिए केवल पुलिस यह सुनिश्चित कर रही थी कि कोई व्यर्थ ही घर से बाहर न निकले तथा यदि आवश्यक कार्य के लिए निकले तो मास्क पहनकर निकले व दो गज की दूरी अवश्य बनाकर रखें। इस प्रकार सरकार ने विभिन्न कार्य किए थे ताकि यह महामारी और ना फैले। सभी को सुरक्षा प्रदान हो सके। इस महामारी से बचाव तब तक करें जब तक इसका कोई टीका या उचित उपचार ना आ जाए।

4

(V) उपसंहार ⇒ इस प्रकार यह त्रासदी विश्व के लगभग प्रत्येक स्थान तक पहुंच चुकी थी। सभी देश इस से बचाव के लिए तरीके अपना रहे थे। शताब्दी की यह महामारी इतिहास के पन्नों मे हमेशा दर्ज रहेगी तथा आने वाली पीढ़ी को इससे बचाव मिल सके।

BSER-168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(22) गली नं 3
हिम्मत नगर
25/05/22

प्रिय देवेश

मैं आशाकरता हूँ तुम वहाँ पर कुशल होंगे यहाँ पर भी सब कुछ ठीक है। वर्तमान मे बीमारियाँ बहुत बढ़ती जा रही है। तुम्हें अपना ध्यान रखना चाहिए। यदि ऐसा लगे तुम रोग से ग्रस्त हो तुरन्त अपनी जाँच करवाना तथा उचित उपचार लेना सभी लोगों से थोड़ी दूरी बनाए रखना तथा जब भी कभी बाहर जाओ तो मास्क अवश्य लगाना। हम सब यही सलाह देते हैं। तुम वहाँ पर अकेले हो इसलिए अपना विशिष्ट ध्यान रखना। अपने आस-पास हमेशा सफाई रखना स्वच्छता रखने से स्वास्थ्य पर भी अनुकुल प्रभाव पड़ता है। अतः अपना ध्यान रखना तथा हमेशा प्रसन्न रहना। तथा अपना ध्यान रखना।

५

मैं तुम्हारें पत्र का इंतजार करूँगा।

तुम्हारा प्रिय भाई
नरेन्द्र

(23) विज्ञापन-लेखन

आइए — सुंदर सुंदर चित्र — आइए

चित्र कला छात्रो द्वारा निर्मित चित्र ले जाइए

५

संपर्क करें
0000000000 — जल्द आइए — कम दाम

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
		(समाप्त)
		(80) अनुपस्थित

BSER-168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-168/2021